प्रथम आयुष विश्वविद्यालय

चर्चा में क्यों?

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उत्तर प्रदेश के पहले आयुष विश्वविद्यालय **'महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय'** का गोरखपुर में उद्घाटन किया।

- उन्होंने इस क्षेत्र की **आध्यात्मिक** तथा **ऐतिहासिक विरासत** पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह **परमहंस योगानंद** की जन्मस्थली भी है।

मुख्य बिंदु

गोरखपुर की आध्यात्मिक और ऐतिहासिक विरासत:

- **नाथ परंपरा:**
  - **श्री आदिनाथ**, **मत्स्येन्द्रनाथ** तथा गुरु गोरखनाथ की शिक्षाओं पर आधारित नाथ परंपरा की उत्पत्ति गोरखपुर में हुई।
  - समय के साथ यह **आध्यात्मिक परंपरा** संपूर्ण भारत में फैली तथा विश्व के अनेक देशों तक पहुँची, जिससे विविध **योगिक** एवं **तप साधना पद्धतियों** पर व्यापक प्रभाव पड़ा।
- **भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:**
  - गोरखपुर का महत्त्व केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि उसका भारत के **स्वतंत्रता आंदोलनों** से भी गहरा संबंध रहा है।
  - **18वीं शताब्दी** में साधुओं के नेतृत्व में हुए विद्रोहों से लेकर 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तक, यह क्षेत्र निरंतर **प्रतिरोध का केंद्र** बना रहा।
  - **बाबू बंधू सिंह** तथा राम प्रसाद बिस्मिल जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान इस **पवित्र भूमि** से गहराई से जुड़ा है, जो इसके **साहस** तथा **देशभक्ति** की परंपरा को उजागर करता है।
- **गुरु गोरखनाथ के बारे में:**
  - गोरखनाथ, जिनका काल संभवतः **11वीं शताब्दी ईस्वी** के आसपास माना जाता है, एक **प्रख्यात हिंदू योगी** और **कानफटा योगियों** के आध्यात्मिक प्रवर्तक माने जाते हैं। यह संप्रदाय **हठ योग** का अभ्यास करने वाले तपस्वियों के रूप में प्रसिद्ध है।
  - **कनफटा योगी**, हठ योग के सिद्धांतों के अनुरूप **शारीरिक अनुशासन** तथा **आध्यात्मिक निपुणता** दोनों पर ज़ोर देते हैं। हठ योग, जो गोरखनाथ की शिक्षाओं से निकटता से जुड़ा है, एक ऐसी दार्शनिक एवं **आध्यात्मिक प्रणाली** है, जो **आध्यात्मिक पूर्णता** के मार्ग में **शरीर पर नियंत्रण** को माध्यम बनाती है।
  - यह विचारधारा **तप** को **गहन योगिक अनुशासन** के साथ संयोजित करती है, जो **कर्मकांडीय** अथवा **विशुद्ध भक्ति परंपराओं** से भिन्न मानी जाती है।

परमहंस योगानंद के बारे में:

- **परिचय**
  - **परमहंस योगानंद** (1893–1952) पश्चिमी दुनिया में स्थायी निवास स्थापित करने वाले पहले **भारतीय योग गुरु** थे।
  - उन्होंने **20वीं सदी** के प्रारंभ में पश्चिमी समाज को भारतीय आध्यात्मिक दर्शन से परिचित कराने में **महत्त्वपूर्ण भूमिका** निभाई।
- **एक स्थायी आध्यात्मिक विरासत:**
  - हालाँकि उनकी प्रारंभिक उपस्थिति ने पश्चिम में गहरा **सांस्कृतिक प्रभाव** डाला, किंतु योगानंद की **स्थायी विरासत** उनके द्वारा प्रेरित **आध्यात्मिक जागृति** में निहित है।
  - उन्होंने वर्ष **1952** में अपने निधन तक सतत् रूप से **व्याख्यान देना**, **लेखन करना** तथा **क्रिया योग**, **ध्यान** और **सार्वभौमिक आध्यात्मिकता** के समन्वय को बढ़ावा देना जारी रखा।
  - वर्ष **1946** में प्रकाशित उनकी मौलिक कृति **'योगी की आत्मकथा'** ने पश्चिमी दुनिया में **आध्यात्मिक क्रांति** को जन्म दिया, जो आज भी प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

आयुष चिकित्सा पद्धति

आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।

आयुर्वेद

भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

- **संहिता काल (1000 ईसा पूर्व):** परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
  - **चरक संहिता:** सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
  - **सुश्रुत संहिता:** आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है
- **मुख्य शाखा:**
  - **आत्रेय पुनर्वसु-** चिकित्सकों की शाखा
  - **दिवोदास धन्वंतरि -** शल्यचिकित्सकों की शाखा

आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।
- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

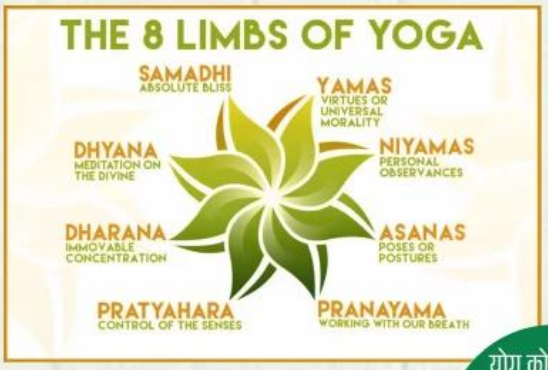

योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

- **प्राकृतिक चिकित्सा:** 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
  - शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
  - रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

यूनानी

ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
  - चार ह्यूमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

सिद्ध

10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्धर अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- **4 घटक:** लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्यूमर्स (मुक्कुट्रम) और 8 महत्त्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ

सोवा रिग्पा

उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

होम्योपैथी

जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- **3 प्रमुख सिद्धांत:**
  - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("सम: समम् शमयति" या "समरूपता")
  - सिंगल मेडिसिन
  - मिनिमम डोज़

दृष्टि The Vision | d
Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/first-ayush-university